"श्री राजश्यामा जी"

इश्क रबद

करी रूहो मसलहत मिल्के कहे हमको प्यारे हक।
और बड़ी रूह प्यारी हमको ए बात जानो मुतलक।।

खिलवत १३/५

परमधाम मे इश्क रबद हुआ। खेल में न भूलने का हमने श्री राज जी महाराज से कौल किया और माया में श्री राजजी की महानता, शोभा, साहेबी को भूल गये। यहाँ माया में आ के दुनिया के झूठे देवी देवताओ को परमात्मा कह के पूजने लगे, उनका आश्रय लेने लगे, तभी सुन्दरसाथ के बीच में स्वामी जी कहते है

हे परमात्मा की अंगनाओ, तुमने परमधाम में जो कौल किया था वो भूल गयी हो तो सबसे पहले श्यामाजी से पूछो की तुमने क्या कौल किया था?

ए बेवरा बीच बका मिने, इश्क का न होय।
दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बकामें सोए।।

खिलवत १३/१४

हम परमधाम में श्री राजजी महाराज और श्यामा जी से कहते थे कि तुम्हारे सिवाय हमे कोई प्यारा नहीं, ये बात बिल्कुल सच है, फिर चाहे कोई लाख कोशिशें क्यों न करे हमें भुलाने के लिए, फिर भी हम आपके अलावा किसी को प्रिय नहीं मानेंगें। हमेशा हमारा प्रेम ही आपसे ज्यादा विशेष रहेगा।

रूहों ऐसा खेल देखाऊ, मैं जित झूठे-झूठ पूजत।
ढूढ़े अव्वल आखिर लग, तो हक न कहुं पाईयत।।

खिलवत १३/१६

तभी श्री राजजी महाराज ने कहा इसका भेद परमधाम में नहीं बताया जा सकता कि किसका प्रेम विशेष है। उसका खुलासा करने के लिए आपको परमधाम से अलग किया जायेगा तभी उसका खुलासा होगा कि किसका प्रेम ज्यादा है और वहाँ से कौन मेरे लिए कुरबानी देकर मेरे साथ परमधाम में आते है मैं तुमको ऐसा खेले दिखाऊंगा जहाँ झूठे नश्वर देवी देवताओ की पूजा होती है, उस वक्त जब एक पारब्रह्म की बात होगी या कोई उनके बारे कहेगा तो कोई मानने को तैयार नहीं होगा क्योंकि उस वक्त ब्रह्माण्ड में मेरे नाम, धाम और लीला की किसी को खबर नहीं होगी।

आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पूजात।
अर्स साहेब कायम की, कहूँ सुपने न पाईये बात।।

खिलवत १३/१७

हम परमधाम से माया के ब्रह्माण्ड में आये यहाँ श्री राज जी के कहने के मुताबिक शादी के समय मे अग्नि पूजा, पत्थर पूजा, गंगाजी और जमुना जी का पानी घर ला के अच्छे बुरे कामों मे उपयोग करना, यह पानी पीने से जीव का उद्धार होगा, यही सब कार्य करने मे हम फँस गये। हमारे

Nijanand App

द्वारा किये गये कौल का भी हमे ज्ञान नहीं रहा।

ए सोई हमारा साहेब, जो बड़को दिया बताय।
ए पत्थर पानी आग हैं, पर हमसो छोड़्या न जाय।।

खिलवत १३/२१

हमारे धनी श्री राज जी महाराज है और हम ही उनको भूल के दूसरे देवी-देवता, आग, पानी, पत्थर की पूजा कर रहे है उसका भी हमें ख्याल न रहा।

बड़के हमारे कदीम के, पूजत आये ए।
सो क्यों छूटे हमसे, रब बाप दादो का जेह।।

खिलक्त १३/२२

आज दिन तक जो हमारे दादा-परदादा करते आये है वही आगे होगा जो कर्मकांड ब्राह्मणों, संतो, मंहतों ने बनाये है- क्या वो सब झूठे है हम तो अग्नि पूजा से ही शादी करायेगें और पानी पत्थर से बने हुए मूर्तियों की पूजा करेगें। श्री राज जी महाराज से तो हमारा आत्मा का संबंध है। परमधाम जाने के लिए श्री राज जी महाराज को जरूर याद करेगें। हमारी आत्मा परमधाम जरूर जायेगी हाँ- परंतु माया में तो देवी देवता को खाविंद बना के जरूर पूजना पड़ेगा। इस प्रकार कई सुन्दर साथ अज्ञानता मे डूबे हुए है।

इन हाल जो दुनिया, ये गईया तिनमें मिल।
मोहें इश्क बिना पावे नहीं,रूहो को ऐसीं भई मुश्किल।।

खिलवत १३/२५

जागनी के लिए आयी हुई बात दिल में सच ही लगेंगी। परंतु जो स्वार्थी समाज है, जिसका मन स्वार्थ के सिवाय कुछ भी नहीं है उनके लिए पहले अहंकार और बाद मे श्री राजजी। समाज के आज्ञा का उलंघन नहीं कर सकते, चाहे राजजी महाराज को भूल के पतिव्रता में से पतीत नार क्यों न बने लेकिन बाप दादाओ के बताये हुए कर्मकांड़ को कभी नहीं छोड़ सकते क्योंकि हमें भी समाज में रहना है।

इश्क रबद की बात परमधाम में हुई और हम सब माया में आये और इसी माया के कर्मकांड रीति रिवाज के साथ ऐसे फंस गये है कि उसके लिए श्री राजजी को छोड़ने को भी तैयार है। परन्तु समाज के गलत रीति रिवाज और रसमें जिसे हमारे धनी छुड़ाने आये है, उसे छोड़ सकते नहीं। यदि हम समाज और देवी-देवताओं का आसरा लेगें तो यह समझ लेना चाहिए कि हम श्री राजजी को पीठ दे रहे है और श्री राजजी को पीठ देकर उनके इश्क के अधिकारी कभी नहीं बनेंगे। हम उनके इश्क के अधिकारी तभी बन सकते हैं जब हम दुनिया के कर्मकांड, झूठे रीति रिवाजों, देवी देवताओं की पूजा करना छोड़ेंगे और एक श्री जी साहेब अनादि अक्षरातीत की पूजा करेंगे, तभी हमें उनका इश्क प्राप्त हो सकता है। जो निजानन्द पद्धति में धनी ने बताया है जिससे परमधाम की रूहें अपने पियु के इश्क को इस माया में प्राप्त कर अपने पियु की हो सकती है अन्यथा रूहो के लिए माया में परमधाम का सुख लेके परमधाम वापस जाना मुश्किल है।

प्रणाम जी

निता पाटिल गांधी नगर, गुजरात

Nijanand App